फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

व्हाट्सएप के जरिये भी अपनी बातें हम तक पहुँचा कर चर्चा का दायरा बढायें। मजदूर समाचार फोन पर पायें और अपने ग्रुपों में भेज कर आदान-प्रदान बढायें। हमारे इस नम्बर पर व्हाट्सएप मैसेज भेजें : 9643246782

नई सीरीज नम्बर 369 मार्च 2019

इश्यु क्या है ?

कौन बोलता है इश्यु क्या है ?

इश्यु मानी ?

अरे इश्यु नहीं जानता।

अरे इश्यु मानी मामले। कुछ बड़े, कुछ छोटे।

फिर आपका इश्यु क्या है ?

अरे आहिस्ता बोल। इश्यु बहुत गम्भीर है और कान खड़े हैं।

अरे छोड़ो, मशीन की आवाज में कान में कुछ नहीं गिरने वाला है।

अरे सुना है कान का व्यायाम किया करते हैं।

उनका यही इश्यु है। कान को चौकस कैसे रखें।

अरे ये मशीन पूजक मशीनों का ख्याल नहीं रख पायेंगे। आवाज बढती जायेगी।

चक्र में घूम गये यार। कान की चौकसी। मशीन की आवाज। कान का खराब हो जाना। मशीन की आवाज और बढ जाना। कान की चौकसी की जरूरत और बढ जाना।

तो यह है तेरा इश्यु।

यह मेरा इश्यु नहीं है। यह क्रूर बुद्धि का इश्यु है।

आहिस्ता बोल। बिजली चली गई है। जनरेटर चलने में थोड़ा टाइम है। तब बोलना। पर यह तो बोल तेरा इश्यु क्या है ?

एक्सीडेन्ट रिपोर्ट। मुझे एक्सीडेन्ट रिपोर्ट समझ आने लगी है। लिखवा कर लेना बहुत जरूरी है। एक्सीडेन्ट हो तो दो चीज। एक ग्रुप सहायता करो जल्दी से। और दूसरा देखो कि एक्सीडेन्ट रिपोर्ट भरी गई। कॉपी लो।

तूने तो बहुत सोचा है इस पर। अब तो इश्यु नहीं रहा।

इश्यु का मतलब क्या है ? एक गुत्थी, एक जटिल गुत्थी, या कोई और बात ?

मेरे ख्याल से इश्यु हम जब बोलते हैं तब किसी विवाद की बात होती है। जैसे कि एक्सीडेन्ट पर जब वाद-विवाद होता है तब इश्यु बनती है।

वाद-विवाद तो बहुत हैं। तो हम क्या इश्यु-इश्यु-इश्यु में तैर रहे हैं ?

आहिस्ता बोल। यह तो रोचक है। रोचक क्यों है? कुछ वाद-विवाद प्रासंगिक होते हैं, उस समय संगत होते हैं। कई पक्ष-विपक्ष होते हैं और उनके पहलवान भी होते हैं , प्रवक्ता होते हैं।

तो आप कह रहे हो कि कोई वाद-विवाद जैसे ही इश्यु बनता है, हमारे से दूर हो जाता है।

यह तो इश्यु का दोहरापन है। वाद-विवाद की आकारहीन धड़कनें तो हमारे बीच उतार-चढाव में रहती ही हैं। लेकिन , इन्हीं वाद-विवादों को आकार देने की जरूरत किनकी है ?

मेरे ख्याल से आकार देने में नियन्त्रण आता है। और शक्ति का भाव भी आता है। छितराये हुये परिवेश को एक कृत्रिम , बनावटी स्पष्टता भी आकार देते हैं।

परन्तु इसके साथ-साथ एक सामुहिक छवि का उभरना भी तो होता है।

सामुहिक छवि , मानी। लेकिन यह छवि हर वक्त धुँधली रहती है। सामाजिक जीवन की गति इतनी तेज है कि इश्यु बुलबुले जैसे हैं अब। उभरते हैं और बिखर जाते हैं। हो सकता है कि कोई उसका अल्पकालिक फायदा उठा ले।

शायद इसीलिये सामुहिक छवि धुँधली और चिथड़ों वाली हो गई है। और शायद इसीलिये बिना माँग वाले वाद-विवाद बहुत जीवन्तता लिये हैं।

यह बात एकदम सटीक है। हम अपने कार्यस्थल पर यह पाये हैं कि जब हम कदम उठाते रहते हैं और कोई माँग नहीं रखते तब मैनेजमेन्ट बहुत घबरा जाती है। और साथियों में आत्मविश्वास बहुत बढ जाता है।

आ-आ इसलिये क्रूर बुद्धि की छटपटाहट बढती जा रही है।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद - 121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

क्रूर बुद्धि की एक झलक

✶ **ऋचा ग्लोबल** (232 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट जबरन ओवर टाइम पर रोकती है। फैक्ट्री की दूसरी मंजिल पर ही 9 लाइनों पर करीब 600 टेलर व अन्य मजदूर काम करते हैं। शिफ्ट सुबह 9 बजे से साँय साढे पाँच की कहते हैं लेकिन रात एक बजे, ढाई बजे, चार बजे, सुबह छह बजे तक रोक लेते हैं। सुबह छह बजे कमरे पर जाओ और 9 बजे लौट कर फिर काम में लगो। लगातार 16-18-20 घण्टे ड्युटी पर भोजन के लिये मात्र 30 रुपये देते हैं। प्रतिदिन के दो घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी के ओवर टाइम के घण्टों का सिंगल रेट से। रविवार को भी ड्युटी, 9 से साढे चार की कहते हैं पर साढे पाँच, रात साढे आठ बजे तक रोक लेते हैं। रविवार को 7 घण्टे के ही पैसे और वो भी सिंगल रेट से। टेलरों के महीने में 150 घण्टे ओवर टाइम के और फिनिशिंग वरकरों के 200 घण्टे से ज्यादा।

✶ **सन्धार टैक्नोलोजीज** (24-25 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में प्रदूषण बहुत है। एक्सीडेन्ट भी बहुत होते हैं। बीस-तीस परमानेन्ट मजदूर, तीन ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 300 वरकर। स्टाफ में 50-60 लोग, 5 मजदूरों के सिर पर एक स्टाफ वाला। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। मशीन ऑपरेटरों को अकुशल श्रमिक वाला ग्रेड। एक मजदूर से दो मशीनें चलवाना सामान्य, वरकर कम पड़ते हैं तब एक बन्दा तीन मशीनें चलाये। एक्सीडेन्ट तो होंगे ही। उँगली-अँगूठे कटते हैं। ट्राली सही नहीं — पैर में चोट लगती हैं। मेन्टेनैन्स की कमी के कारण चाबी-पाना उछल कर सिर में लगते हैं। हैल्मेट नहीं, चश्मा नहीं, मास्क नहीं। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते। बस प्रोडक्शन चाहिये।

✶ **मिल्कबास्केट** (गुड़गाँव) में पाँच सौ वरकर काम करते हैं। ऑनलाइन हैं। रात साढे दस बजे से सुबह साढे सात की ड्युटी में हरी सब्जियाँ, दूध , दही, चिकन, मटर, पनीर की पैकिंग, पिकिंग, लोडिंग, अनलोडिंग, डेलीवरी में इधर-उधर भागना पड़ता है। लगातार रात की ड्युटी। नाइट अलाउन्स नहीं। तनखा देरी से। कम्पनी एक समय का भोजन देती थी, इधर 1 मार्च से बन्द कर दिया है।

✶ **कैलाश रिब्बन** (403 उद्योग विहार फेज-3 गुड़गाँव) फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट ने 8 शौचालय तुड़वा दिये हैं, 300 वरकरों के लिये अब मात्र दो लैट्रीन हैं। पानी का फिल्टर महीनों से खराब है। जनवरी की तनखा 23 फरवरी को दी।

✶ **अपोलो गारमेन्ट्स** (13 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में स्टाफ के लोग ही परमानेन्ट हैं। एक ठेकेदार कम्पनी के जरिये मैनेजमेन्ट ने डेढ-दो हजार वरकर रखे हैं। शिफ्ट सुबह साढे नौ से साँय 6 की बताते हैं लेकिन रात 8-9-12 बजे, अगली सुबह 4 बजे तक जबरन काम। महिला मजदूर रात 9 बजे तक। महीने में 100 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम। पे-स्लिप में 10-12 घण्टे ओवर टाइम दिखाते हैं। अधिकतर ओवर टाइम को मकान भत्ता बना देते हैं। बायर जारा आदि हैं।

✶ **रादनिक एक्सपोर्ट** (186 उद्योग विहार फेज-1 गुड़गाँव) फैक्ट्री में एक वरकर ने 2017 में पूरे साल काम किया। आधार कार्ड मैनेजमेन्ट को भर्ती के समय दिया था। पी एफ का फार्म भरते समय मैनेजमेन्ट ने वरकर के नाम, उनके पिता के नाम, आयु में गड़बड़ी की। ये ठीक करवाये बिना फण्ड के पैसे नहीं निकलेंगे। मजदूर फैक्ट्री के कई चक्कर लगा चुका है। एच आर वाले बदतमीजी करते हैं।

✶ **के एच एम ड्राइव सिस्टम** (121 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में 150 से ज्यादा मजदूर मारुति वाहनों के गियर बनाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। प्लाज्मा वैल्डिंग के लिये पचास से अधिक रोबोट। एक मजदूर दो रोबोट चलाये। और, फैक्ट्री में सब वरकरों को अकुशल श्रमिक वाला ग्रेड। खड़े-खड़े काम। साइकिल टाइम, टारगेट बहुत ज्यादा, पाँच मिनट बैठ गये तो उत्पादन कम, डाँट-फटकार। ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 100 से ज्यादा वरकरों को बोनस नहीं। मैनेजमेन्ट बाहर से भोजन मँगवाती है, बहुत खराब खाना।

(बाकी पेज चार पर)

गार्ड

कम्पनियों की अपनी सरकार के कानून अनुसार 12 घण्टे लगातार ड्युटी दो दिहाड़ी के बराबर है। और साप्ताहिक अवकाश के दिन 12 घण्टे ड्युटी तीन दिहाड़ी के बराबर है। गार्डों को जो एक महीने की तनखा के तौर पर पैसे दिये जाते हैं। वो वास्तव में नब्बे प्रतिशत गार्डों की ढाई महीने की तनखा होती है।

✶ **डिवाइन सेक्युरिटी** (कार्यालय ए-50 सरिता विहार) दिल्ली में करीब 500 गार्ड सप्लाई करती है। अधिकतर की ड्युटी शो रूमों पर। खड़े रहना 12 घण्टे। साप्ताहिक अवकाश नहीं। अधिकतर गार्ड की ई एस आई तथा पी एफ नहीं और भुगतान चेक की बजाय नगद। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के डिवाइन सेक्युरिटी दिल्ली में कुछ गार्ड को 12,500 रुपये और कुछ को 9000 रुपये देती है।

✶ **एस ए ए सेक्युरिटी** द्वारा गुड़गाँव में कम्पनियों को सप्लाई किये गार्डों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी। साप्ताहिक अवकाश नहीं। ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के गार्ड को 10,700 रुपये।

✶ **दबंग सेक्युरिटी** (कार्यालय नारायणा) द्वारा दिल्ली में कम्पनियों को सप्लाई गार्डों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। साप्ताहिक अवकाश नहीं। ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के रात में ड्युटी वाले गार्ड को 9000 रुपये और दिन में ड्युटी वाले को 10,000 रुपये।

✶ **एफ डी आई सेक्युरिटी** (कार्यालय नोएडा) द्वारा दिल्ली में कम्पनियों को सप्लाई गार्डों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। साप्ताहिक अवकाश नहीं। ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर गार्ड को प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के 12,400 रुपये।

✶ **एस आई एस सेक्युरिटी** ने उद्योग विहार, गुड़गाँव में कम्पनियों को 250-300 गार्ड सप्लाई किये हैं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। साप्ताहिक अवकाश नहीं। ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर, प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के गार्ड को 12 हजार रुपये। एस आई एस सेक्युरिटी वर्दी-जूते के वर्ष में 2800 रुपये काटती हैं और कहती है कि आधे पैसे लौटा देगी। लेकिन 2018 में किसी गार्ड को 1400 रुपये वापस नहीं दिये हैं।

एस आई एस सेक्युरिटी के सेन्ट्रल स्टोर (सी-82 ओखला फेज-1, दिल्ली) में वरकरों की तनखा 12000 रुपये। इन 12 हजार में से ई एस आई तथा पी एफ की राशि काटते हैं।

✶ **ग्रुप 4 सेक्युरिटी गार्ड :** '' साथी गार्ड राजू दिल्ली में फार्म हाउस ब्रान्च के एरिया में ड्युटी करते थे। ग्रुप फोर कम्पनी द्वारा इधर उन्हें ड्युटी नहीं दी जा रही थी। ऐसे में उन्होंने 2 मार्च को रंगपुरी में अपने घर पर आत्महत्या कर ली। ग्रुप फोर की मनमानी के विरोध में 5 मार्च को 11 बजे जी 4 एस की जनकपुरी ऑफिस पर एकत्र होने की चर्चा ग्रुप फोर गार्डों के बीच।''

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर सेंटर रूल्स 1956 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (रूल नं. 8)

फरीदाबाद मजदूर समाचार

1. प्रकाशन का स्थान — मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद—121001
2. प्रकाशन अवधि — मासिक
3. मुद्रक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
4. प्रकाशक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
5. संपादक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों। केवल शेर सिंह

मैं, शेर सिंह, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनाँक 1 मार्च 2019 हस्ताक्षर शेर सिंह प्रकाशक

जिम्मेदारी मैनेजमेन्ट की

फैक्ट्रियों में ठेकेदार कम्पनियों के जरिये मजदूर रखना बहुत-ही व्यापक है। निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं, तनखा में देरी, छोड़ने पर दस-बीस दिन किये काम के पैसे नहीं देना, आम हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं, 20 दिन पर एक सवेतन छुट्टी नहीं, ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से नहीं, वार्षिक बोनस नहीं, सामान्य हैं। सुरक्षा के उपकरण नहीं, ई एस आई कार्ड नहीं, पी एफ नहीं— अथवा जमा नहीं करना — अथवा कम जमा करना — अथवा फण्ड निकालने के लिये जो आश्यक है वह नहीं करना, फैक्ट्रियों में सामान्य हैं। मैनेजमेन्ट हर मर्ज की एक दवा बताती है : हम कुछ नहीं जानते, ठेकेदार से बात करो। जबकि ठेकेदार कम्पनियों से समझौते मैनेजमेन्ट स्वयं करती है और अपना कट-कमीशन लेती है। वैसे, कम्पनियों की अपनी सरकार का कानून है कि फैक्ट्री की हर बात के लिये फैक्ट्री मैनेजमेन्ट जिम्मेदार है।

इसलिये उत्पादन करने वाले मजदूर हों, या कैन्टीन वरकर हों, या सेक्युरिटी गार्ड हों, या हाउसकीपिंग मजदूर हों, पहली बात तो यह बनती है कि ऊपर वाली बातों के लिये ठेकेदार कम्पनियों के चक्कर नहीं काटना।
क्या-क्या आसानी से कर सकते हैं :

1) कम्पनी से, फैक्ट्री से मजदूर की कोई नातेदारी-रिश्तेदारी नहीं होती। काम, और सिर्फ काम का सम्बन्ध है। ऊपर जिन मामलों का जिक्र किया है उनके समाधान के लिये प्रोडक्शन पर असर डालना कारगर है। और, यह मिल कर ही आसानी से कर सकते हैं।

2) टी-ब्रेक में, लन्च-ब्रेक में सब वरकर आसानी से एकत्र हो जाते हैं। मैनेजर के पास इक्ट्ठे जाना, दो-तीन का आगे हो कर नहीं बोलना, साहब को समझाने की कोशिश नहीं करना, समाधान की राह पर बढना है। चार-पाँच बार सौ-दौ सौ का मैनेजर के पास इक्ट्ठे जाना आमतौर पर पर्याप्त होता है।

3) आपस में चर्चायें कर एक-दो दिन सब मजदूरों का फैक्ट्री जाना ही नहीं, आसान और कारगार है।

4) फैक्ट्री छोड़ दी है, अथवा अकेल-दुकेले हो गये हैं तो फैक्ट्री मैनेजमेन्ट के खिलाफ सम्बन्धित सरकारी विभाग को शिकायत करना मुश्किल नहीं है। ईमेल द्वारा शिकायत करना आसान और सस्ता भी है। नौकरी करते हुये कर सकते हैं। अपनी मेल आई डी से नहीं बल्कि अन्य फैक्ट्री के साथी की मेल आई डी प्रयोग करना निश्चिन्त रहना लिये है।

✶**आई आई इन्सपैक्शन एण्ड एक्सपोर्ट** (95 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में सुबह 9 से रात साढे आठ बजे तक ड्युटी रोज है और फिर मैनेजमेन्ट रात 10-11-1 बजे तक रोक लेती है। धागा कटिंग के लिये मैनेजमेन्ट ने एक ठेकेदार कम्पनी के जरिये 20 वरकर रखी थी। इन मजदूरों के जनवरी में 10-12-15 हजार रुपये बने। पैसे नहीं दिये और ठेकेदार कम्पनी भाग गई। धागा कटिंग करती महिला मजदूरों ने मैनेजमेन्ट से अपने पैसे माँगे। ठेकेदार-ठेकेदार करके मैनेजमेन्ट टालमटोल करने लगी। धागा कटिंग वरकरों ने अन्य मजदूरों के सहयोग से दबाव बढाया। मैनेजमेन्ट ने दो-ढाई-तीन हजार रुपये वरकरों को 23 फरवरी को दिये। और बाकी पैसे ?

✶**ई आर ऑटो** (184 सैक्टर-4 आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। एक-दो मिनट की देरी से फैक्ट्री पहुँचने पर ओवर टाइम का एक घण्टा काट लेते हैं। सेलरी स्लिप नहीं देते, किस हिसाब से पैसे बनाये इसका मजदूरों को पता नहीं चलता। तनखा से ई एस आई तथा पी एफ की राशि काटी जाती है लेकिन जमा नहीं की जाती। ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे वरकरों के साथ फैक्ट्री में सुपरवाइजर और इनचार्ज बहुत बदतमीजी से बात करते हैं।

✶**ऋचा एण्ड कम्पनी** (239 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में सिलाई विभाग वरकरों को 1000 से 2500 रुपये उपस्थिति भत्ता लेकिन कपड़ा स्टोर, कटिंग, वाशिंग आदि विभागों के वरकरों को उपस्थिति भत्ता नहीं। पेमेन्ट में भी दुभान्त। सिलाई विभाग वरकरों की तनखा तथा ओवर टाइम के पैसे एक साथ बैंक खातों में। अन्य विभागों की तनखा 5 से 8 तारीख को खातों में। फिर 8 से 12 तारीख के दौरान दुगुनी दर से ओवर टाइम वाले पैसे खातों में। और फिर 10 से 15 तारीख के दौरान ओवर टाइम के जिन घण्टों के पैसे सिंगल रेट से देते हैं वह राशि विभागों में पहुँच कर कैशियर नगद देते हैं। मैनेजमेन्ट जब नाइट लगवाती है तब भोजन के लिये मात्र 30 रुपये देती है।

✶**ज्योति एपरेल्स** (10 सैक्टर-5 आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में फिनिशिंग इन्चार्ज और क्वालिटी मैनेजर बहुत बदतमीजी करते हैं मजदूरों के साथ।

साझेदारी

✶ आई एम टी मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, नोएडा, फरीदाबाद में मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ किया है। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

& शुक्रवार, 29 मार्च को सुबह 6 बजे से 9½ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।

— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास वीरवार, 28 मार्च को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।

— शनिवार, 30 मार्च को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।

✶ फरीदाबाद में मार्च में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782
ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

हरियाणा में 1 जनवरी 2019 से न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक	8827 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 340 रुपये)
अर्ध-कुशल अ	9269 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 357 रुपये)
अर्ध-कुशल ब	9732 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 374 रुपये)
कुशल अ	10,219 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 393 रुपये)
कुशल ब	10,730 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 413 रुपये)
उच्च कुशल श्रमिक	11,266 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 433 रुपये)
गार्ड	9269 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 357 रुपये)
शस्त्रधारी गार्ड	10,730 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 413 रुपये)
सफाईकर्मी	9408 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 362 रुपये)
ड्राईवर हल्का वाहन	10,730 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 413 रुपये)
ड्राईवर भारी वाहन	11,266 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 433 रुपये)

ट्रान्सफर

इस-उस कारण से कम्पनियाँ स्थान परिवर्तन करती रहती हैं। ऐसे में अकेले-दुकेले की बजाय वरकरों द्वारा मिल कर करना, सामुहिक रूप से करना बनता है।

पहली बात तो रिजाइन नहीं देना, इस्तीफा नहीं लिखना बनता है। फिर ट्रान्सफर लेटर के लिये दबाव बनाना। नये स्थान पर आने-जाने के लिये कम्पनी द्वारा बस का प्रबन्ध करने पर जोर देना। नये स्थान पर निर्धारित न्यूनतम वेतन कम है तो जहाँ से जा रहे हैं वहाँ के वेतन को बनाये रखने पर जोर देना। और, ट्रान्सफर से होती अतिरिक्त असुविधाओं तथा अधिक समय लगने के क्षतिपूर्ति के तौर पर अतिरिक्त पैसों, एडवान्स राशि आदि के लिये दबाव डालना बनता है।

लेना, मिल कर लेना

सुप्रीम कोर्ट के आदेश अनुसार 1 नवबर 2018 से दिल्ली में न्यूनतम वेतन 14,000-15,400-16,962 रुपये अकुशल-अर्ध कुशल-कुशल श्रमिक के लिये है। मार्च-आरम्भ तक दिल्ली सरकार ने न्यूनतम वेतन का निर्धारण नहीं किया था।

✶ **इन्टरव्यू फैशन** (बी-294 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री में मजदूरों द्वारा मिल कर कदम उठाने का असर दिखा है। मैनेजमेन्ट ने हर वरकर के 1200 रुपये बढाये हैं। लेकिन अब भी निर्धारित न्यूनतम वेतन से तनखा कम है। टेलर की तनखा 11-12 हजार और हैल्पर की तनखा 9 से साढे दस हजार रुपये। और हाँ, ई एस आई तथा पी एफ 175 मजदूरों में 40-45 की ही हैं।

✶ **विभा प्रेस** (सी-66/3 ओखला फेज-2, दिल्ली) में ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 250 वरकर निकाल दिये हैं। अब 60-70 मजदूर रह गये हैं। ड्युटी 12 घण्टे की है और ओवर टाइ के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 7-8 हजार रुपये और ऑपरेटरों की 11-12 हजार रुपये। ई एस आई तथा पी एफ 15-20 मजदूरों की। इधर फरवरी में एक दिन सब वरकर ऑफिस में गये और दिल्ली में निर्धारित न्यूनतम वेतन की कही तो साहब बोला कि जाओ मुख्य मन्त्री से लो।

✶ **बादशाह बुटीक** (डी-1 भरत नगर, दिल्ली) में 60 वरकर काम करते हैं। ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। हैल्पर की तनखा 8000 रुपये और टेलर की 12500 से 14500 रुपये। दक्षिणी दिल्ली के श्रम विभाग और दिल्ली सरकार के श्रम मन्त्रालय को सब मजदूरों ने हस्ताक्षर कर पत्र दिया है। एक महीने बाद भी कोई जवाब नहीं।

✶ **महिन्द्रा वर्कशॉप** (बी-24 ओखला फेज-1, दिल्ली) में पैन्ट्री वरकरों की तनखा 7500 रुपये। यह मजदूर काम दिल्ली में करते हैं परन्तु कम्पनी उन्हें नोएडा में ड्युटी करते दिखाती है। यह वरकर दिल्ली के मुख्य मन्त्री के पास गये थे। वो बोले कि देखूँगा। मार्च-आरम्भ तक तो कोई नहीं आया है।

✶ **पापुलर इन्टरप्राइजेज** (सी-51 ओखला फेज-1, दिल्ली) कडिला फार्मा कम्पनी की कमीशन एजेन्ट है। पूरी दिल्ली में 25 वरकर दवाइयाँ सप्लाई करते हैं लेकिन कागजों में 10 वरकर दिखाते हैं। ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। वरकरों की तनखा 12-14 हजार रुपये। कम्पनी के संचालक नत्थु स्वीट्स वाले हैं और नत्थु स्वीट्स वरकरों के दबाव के कारण वहाँ सफाई कर्मी की तनखा भी 17 हजार रुपये करनी पड़ी है।

✶ **किरण उद्योग** (बी-182 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री में काम करते 70 मजदूरों की ई एस आई तथा पी एफ हैं। हैल्पर की तनखा 8000 रुपये और ऑपरेटर की 10,500 रुपये है लेकिन मैनेजमेन्ट दिल्ली में ग्रेड अनुसार तनखा दिखाती है। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे जोड़ कर बैंक खाते में भेजे पैसों को तनखा दिखाते हैं। ऑपरेटरों के मामले में यह पर्याप्त है। लेकिन हैल्परों के ओवर टाइम के पैसे जोड़ने पर भी निर्धारित न्यूनतम वेतन से पैसे कम पड़ते हैं। ऐसे में ड्युटी वाले दिनों को भी छुट्टियों पर दिखा कर, हैल्परों को ग्रेड अनुसार भुगतान कम्पनी दिखाती है। टोकने पर सुपरवाइजर, मैनेजर असहायता दिखाते हैं। दबाव बढाने के लिये किरण उद्योग वरकर प्रोडक्शन डाउन करके चल रहे हैं।

✶ **अनसुन मल्टीटेक** (बी-123 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री में 200 परमानेन्ट मजदूरों को प्रतिदिन 12 घण्टे की ड्युटी पर 26 दिन के 13 - 14-15-17-18 हजार रुपये। एक ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे 300 वरकरों में महिला मजदूरों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 6-7 हजार रुपये और पुरुष वरकरों को 8500 रुपये। ✶ **ग्रोवरसन्स** (135 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में तीन लाइनों के टेलरों ने 4 फरवरी को 11 बजे काम बन्द कर दिया और पूरे दिन बन्द रखा। फिर 5, 6, 7 तारीख को भी यह सिलाई कारीगर ड्युटी के लिये पहुँचे, काम बन्द रखा, फैक्ट्री में बैठे रहते। कम्पनी के दिल्ली में करोलबाग कार्यालय भी ये वरकर गये। आठ फरवरी को भी मशीनें बन्द रख यह टेलर फैक्ट्री में बैठे, मैडम आई, बातचीत की, पैसे बढाये, दो बजे काम शुरू किया। ग्रोवरसन्स फैक्ट्री में सिलाई की आठ लाइनें हैं।

बीस—बाइस वर्ष

गुड़गाँव, नोएडा, दिल्ली में कई फैक्ट्रियों में काम, होटल लाइन में भी काम कर चुका अनुभवी मजदूर :

मैनेजमेन्ट के लोगों को सिर्फ काम से मतलब है। साहब लोग वरकरों को हेय दृष्टि से देखते हैं। रोज की खींचातान में उत्पादन पर असर डालना मजदूरों के हाथों में एक कारगर औजार है।

बात सन् 2002 की है। मोडलामा फैक्ट्री (200 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) में चैकर था। मैनेजर ने चैकरों का ओवर टाइम कम करने के लिये ड्युटी के बाद सब को रोकने के बजाय कुछ-कुछ करके बारी-बारी से रोकना शुरू किया। हम चैकरों ने आपस में चर्चा की और मिल कर प्लान बनाया। काम में लापरवाही करेंगे, माल खराब होगा, मैनेजर अपने आप आ कर बात करेगा।

सुबह टेबल पर गलत माल देख कर साहब पूछते। उत्तर में, "चार हाथ तो हैं नहीं कि दो फैक्ट्री में छोड़ जायें और दो घर ले जायें।"

दो ही दिन में नाक में दम। मैनेजर लाइन पर आ गया। सब चैकरों को ओवर टाइम फिर शुरू किया। उस समय मोडलामा फैक्ट्री में चैकर पाँच ही थे।

क्रूर बुद्धि की एक झलक....(पेज दो का शेष)

✶ **लोगवेल फोर्ज** (116 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री इधर शनिवार और रविवार को बन्द। कम्पनी रोल पर जो हैं उनके पैसे मैनेजमेन्ट नहीं काटती लेकिन ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे वरकरों के सप्ताह में दो दिन के पैसे काटती है। वैसे अब भी फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम — तनखा को 26 की बजाय 30-31 से भाग कर मैनेजमेन्ट दर निकालती है।

✶ **रूप ऑटो** (739 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में महीने में पूरी उपस्थिति पर वरकर को 750 रुपये और एक भी एबसेन्ट पर 750 शून्य हो जाता है। इधर जनवरी से मैनेजमेन्ट ने हाजिरी बतानी बन्द कर दी है। गड़बड़ी। दो-चार लोगों की एक अनुपस्थिति लगा कर उनके 750 रुपये गायब करना। ✶ **निपुण एक्सपोर्ट** (मकान नम्बर 1425/13 गोविन्दपुरी, कालकाजी, दिल्ली) रिहायशी क्षेत्र में फैक्ट्री है। पाँच मंजिला मकान में 150 मजदूर काम करते हैं। हैल्परों की तनखा 6500-7000 रुपये और टेलर को 8 घण्टे के 450-475 रुपये। ई एस आई तथा पी एफ दो-चार की मुश्किल से। ✶आई एम टी मानेसर में **होण्डा दुपहिया** फैक्ट्री मैनेजमेन्ट ने परमानेन्ट मजदूरों, ट्रेनी, कम्पनी कैजुअलों को एक शिफ्ट में कर दिया है। कुछ छुट्टियों को कम्पनी वहन करेगी और कुछ को ये वरकर। लेकिन फैक्ट्री में अधिकतर उत्पादन कार्य करते ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे वरकरों को ऐंवे ही फैक्ट्री से बाहर कर दिया है। मण्डी में माँग की कमी के सम्मुख असहाय मैनेजमेन्ट की यह प्रतिक्रिया है।

और मजदूर समाचार

मजदूर समाचार के जनवरी अंक की बीस हजार प्रतियाँ छपी थी और फरवरी अंक की पच्चीस हजार छपी हैं। तथा व्हाट्सएप और ईमेल द्वारा कई अन्य पाठक जुड़े हैं।

फरवरी अंक की 25 हजार प्रतियाँ जो छपी हैं वो पाठकों द्वारा और पाठक निर्मित करने की प्रक्रिया के कारण हैं। पाठक अपनी प्रति के साथ पाँच-दस-बीस-पचास-सौ-दो हजार प्रतियाँ ले कर अपने संवादों के लिये माहौल की रचना कर रहे हैं।

सब को निमन्त्रण है।

सम्पर्क के लिये फोन और व्हाट्सएप नम्बर : 9643246782

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। **RN 42233**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।